

सं० ओ० वि०/एफ०डी०/148-86/38285.—चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० आरती ग्रेकाई, प्रांलि०, तिगांव रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री जाई, पुत्र श्री मिथाल, मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कालोनी, पुराना फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई शौद्धोगिक विवाद है ; और चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवादों को व्यायित्तिंय देते निर्दिष्ट करना बांधकारी सम्बन्धते हैं :

इसलिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, को धारा 10 की उप-धारा-(1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की मई शक्तियों का प्रयोग करते हुए; हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम- 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु] निर्दिष्ट करते हैं [जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त भामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित भामला है :—]

क्या श्री जगद्गुरु की स्मृति अमोक्षण समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० ओ०वि०/एफ०टी०/148-86/38292.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० आरती ग्रेफाईट, प्रा० लि०, तिगांव रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम कैलाश, पुन्न श्री काणु राम, मार्कंड फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कलोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्धेगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्गम्य है तो निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254 दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना को धारा, 7 के प्रयोग गठित श्रम न्यायालय, करोड़ाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तोन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त या मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री राम कैलाश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ओ०वि०/ए००डी०/148-86/38299.-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० आरती ग्रेफ़ाइड, प्रा० लि०, तिगांव रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री मुन्नी लाल, पुत्र श्री राम निहोर, मार्क्फ फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कलोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के [बंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचनां की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिण्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अधिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथमा सम्बन्धित मामला है:-

व्या श्री मन्त्री लाल की सेवाओं का समापन न्यायेचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 14 अक्टूबर, 1986

सं० घ्र० वि०/एफ०डी०/148-86/38307.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० आरती एफाईट, प्रा० लि०, तिगांव रोड, फरीदाबाद, के अधिकारी श्री यश चाल, पुत्र श्री शिव बरन, मार्केट फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कालोनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई शीघ्रगिक विवाद है; ०

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की द्वारा 10 की उपद्वारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की द्वारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट की तरफ से देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा असिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अधिकारी संबंधित मामला है:—

क्या श्री श्याम लाले की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कार है?